R.N.I. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2021-23

मूल्य-4 रुपये, वर्ष-22, अङ्क-8 अगस्त 2022 1

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ (उ०प्र०) का
मासिक मुख समाचार पत्र

मङ्गलायतन

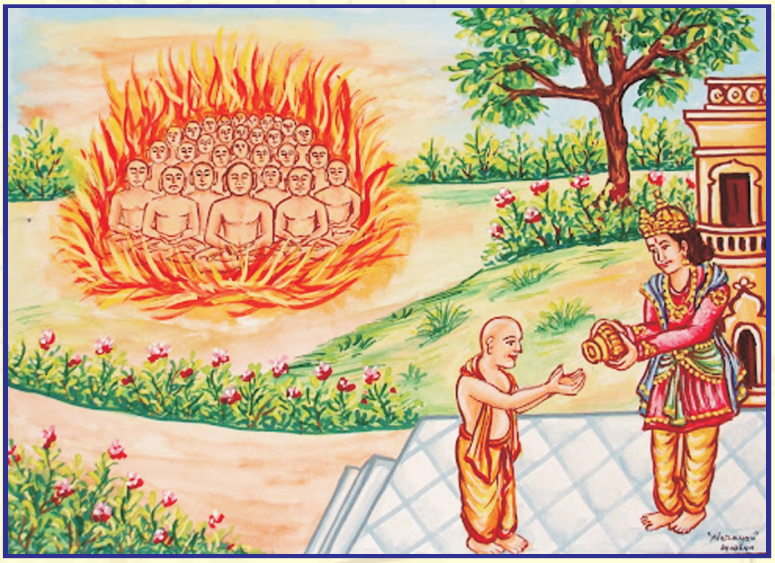

वह पवित्र आत्मा जयवन्त वर्ते!

अहो, उसकी मुद्रा! अहो, उसकी गम्भीरता! अहो, उसका पावन ज्ञान! अहो, उसकी शान्ति! अहो, उसकी चिन्मुद्रा के स्वरूप की झलक! अहो, उसकी विनय! अहो, उसका वैराग्य! अहो, उसकी निरभिमानता! अहो, उसकी भक्ति! अहो, उसकी वत्सलता! अहो, उसका आत्मध्यान! अहो, वह आत्मद्रव्य! उस सर्व गुण सम्पन्न आत्मा को नमस्कार!

तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा संचालित
भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के होनहार मङ्गलार्थी
कक्षा 12 वीं

Varang Jain (96.8%)
S/o Shri Amit Jain
Indore (M.P.)
School - 3rd Rank
District - 7th Rank

Rishabha Jain (95.8%)
S/o Shri Amit Jain
Ambah (M.P.)
School - 5th Rank

Tanishka Bukhariya
(95.6%)
S/o Shri S. Bukhariya
Lalitpur (U.P.)

Samyak Jain
(94.4%)
S/o Shri S. Jain
Sagar (M.P.)

Rachit Jain
(94.2%)
S/o Shri R. Jain
Udaipur (Raj.)

Ayush Jain
(92.6%)
S/o Shri Atul Jain
Jhansi (U.P.)

Apoorva Jain
(92.00%)
S/o Shri Ashish Jain
Lalitpur (U.P.)

Samyak Jain
(88.8%)
S/o Shri Ravi Jain
Saharanpur (U.P.)

Ashraya Jain
(88.6%)
S/o Shri M. K. Jain
Harpalpur (M.P.)

Sanchar Jain
(88.6%)
Shri Manish Jain
Kareli (M.P.)

Kratikraj Jain
(88.0%)
S/o Shri S. Jain
Jabalpur (M.P.)

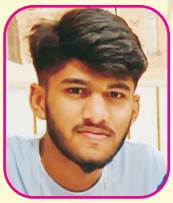

Aarjav Jain
(81.4%)
Shri Rajeev Jain
Madawara (M.P.)

Aditya Jain
(76.8%)
Shri Nitin Jain
Lalitpur (U.P.)

Samyak Jain
(68.0%)
Shri P. S. Jain
Shikohabad (U.P.)

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़ (उ.प्र.) का

मासिक मुखपत्र

वर्ष-22, अङ्क-8 (वी.नि.सं. 2548; वि.सं. 2079) अगस्त 2022

वात्सल्य पर्व पर विशेष—

यदि हम विष्णुकुमार बन सकें

यदि हम विष्णुकुमार बन सकें
तो अपना क्या अखिल विश्व का सचमुच हम उद्धार कर सकें।
थे राजपुत्र हस्तिनापुर के, किसी बात की कमी नहीं थी।
लौकिक सुख-सामग्री संचित, कहने भर की देर रही थी॥
महापद्म थे पिता चाहते, अपने प्राणों से ज्यादा।
माता लक्ष्मीवती चाहती, थी दृग की पुतली से ज्यादा॥
किन्तु विष्णु थे सत्यविष्णु ही, जल में रहकर अलग कमल से।
करने उत्सुक सत्य आत्म-हित, पड़े पंक में रत्न अमल से॥
बाट जोहते बिता रहे थे, निज जीवन का दिन कब आवे।
जन्म जात सा निर्विकार हो, वेश दिगम्बर तन धर पावे॥
जिसकी रही भावना जैसी, मिली सफलता उसको वैसी।
पिता-पुत्र मिल लगे सोचने, संसृति भूल भूलैयां जैसी॥
दोनों ने ही श्रुतसागर आचार्य चन्द्र से ली वह दीक्षा।
जिसमें जाड़ा-गर्मी-वर्षा और नग्नता चरम परीक्षा॥
गात-मोह तज आत्म-दिशा में हो कठोर सुकुमार बढ़ सकें—
यदि हम इतना सत्य कर सकें—
तो हम विष्णुकुमार बन सकें।

संस्थापक सम्पादक
स्व. पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, अलीगढ़
स्व. श्री पवन जैन, अलीगढ़

सम्पादक
डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन

सह सम्पादक
पण्डित सुधीर जैन शास्त्री, मङ्गलायतन

सम्पादक मण्डल
ब्रह्मचारी पण्डित ब्रजलाल शाह, वढ़वाण
बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी, सोनगढ़
डॉ. राकेश जैन शास्त्री, नागपुर
श्रीमती बीना जैन, देहरादून

सम्पादकीय सलाहकार
डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर
पण्डित विमलदादा झाँझरी, उज्जैन
श्री चिरंजीलाल जैन, भावनगर
श्री प्रवीणचन्द्र पी. वोरा, देवलाली
श्री वसन्तभाई एम. दोशी, मुम्बई
श्री श्रेयस् पी. राजा, नैरोबी
श्री विजेन वी. शाह, लन्दन

मार्गदर्शन
डॉ. किरीटभाई गोसलिया, अमेरिका
पण्डित अशोक लुहाड़िया, अलीगढ़

इस अङ्क के प्रकाशन में सहयोग-
श्री कश्यप,
चेतन जैन, बडोदरा
हस्ते **श्री अजित जैन,**
बडोदरा (गुज०)

क्या - कहाँ

दशलक्षण पर्व 7
भगवान पार्श्वनाथ 9
स्वभाव के वेदन में 12
श्री समयसार नाटक 16
दशलक्षण पर्व में, ... 22
प्रेरक-प्रसंग 23
महाकवि पुष्पदन्त 24
जिस प्रकार-उसी प्रकार 27
समाचार-दर्शन 28

शुल्क :
वार्षिक : 50.00 रुपये
एक प्रति : 04.00 रुपये

(१)

समभाव-साधना में तन्मय, जब बढ़े विष्णु गुरु से आगे।
आत्म ध्यान की सुखद दिशा में, भौतिक जड़ता से भागे॥
हुई विक्रिया ऋद्धि प्राप्त कब, अनुभव किया न अणुभार मन में।
देख दशा योगी की पुलकित, धरणी-भूषण गिरिवर मन में॥
कहा पुष्पधर विद्याधर ने, समाचार जब गुरु का जाकर॥
व्यथित बहुत आचार्य अकम्पन, संघ सात सौ मुनि-जन लेकर।
रक्षा उनकी करो शीघ्र जा, आत्म-साधना की बलि देकर॥
''मुझे विक्रिया ऋद्धि प्राप्त सच, देखूं तो मैं अपनी काया।
कर फैलाया, फैला मीलों, कहीं उन्हें भी नजर न आया॥''
गुरु द्वारा निर्देशित पथ में, बढ़े विष्णु शीघ्र ही पुर में।
यह उपसर्ग मिटाऊं निश्चित, रक्षा के भाव प्रबल उर में॥
यदि हम भी सब कुछ दे अपना, दुखियों का उद्धार कर सकें—
हो कठोर सुकुमार बन सकें—
तो मुनि विष्णुकुमार बन सकें।

(२)

''कहो बन्धु कुछ क्या उपसर्ग कराया तुमने कुल-कलंक बन?
वीतराग मुनियों को दुख दे, क्या कितना पाया तुमने धन?''
कहा पद्म ने 'सात दिवस को सचिव बालि को दिया राज्य-धन।
हो ब्राह्मण वह यज्ञकर रहा, मैं निभा रहा-निज दिया वचन॥''
सुनते ही यह ब्राह्मण जैसा, वेश बनाया सत्य विष्णु ने।
दिव्यध्वनि से वेद मंत्र कह, हृदय बालि का हरा विष्णु ने॥
कहा बालि ने 'श्रेष्ठ विप्रवर! हमें प्रसन्न, जो चाहो माँगो।
अवसर ऐसा फिर न मिलेगा, लज्जा संग दरिद्रता त्यागो।'
''खड़ा रह सकूँ निर्भय निश्चल मात्र तीन पग वसुधा दे दो।
सत्य सनातन धर्म-वेद सी, वैदिक संस्कृति को बल दे दो॥''

'जहाँ तुम्हारा जी चाहे, तुम तीन पैर वसुधा ले लो।
पर दानशीलता से मेरी, तुम बच्चों जैसा मत खेलो॥''
यह सुनते ही मुनि विष्णु ने, एक पैर रक्खा सुमेरू पर।
और दूसरा कदम उठाकर, रखा मानुषोत्तर गिरिवर पर॥
रखा तीसरा पैर कँपा जग, सचिव बालि के पृष्ठ भाग पर।
क्षमा माँगने लगा बालि भी, निज कुकृत्य-हित जी भरकर॥
तो मुनिवर ने शरणागत को, छोड़ दिया फिर वचन बद्ध कर।
राखी का आदर्श बताने, वात्सल्य की अंजलि भर कर॥
कह जाती यह बात सदा ही, आश्रावण सुदी पूर्णिमा है।
एक मात्र हो बचा सात सौ, विष्णु! अमित तब महिमा है॥
यदि हम भी वात्सल्य भाव ले, विश्व शान्ति भंडार बन सकें।
सब समान हुंकार कर सकें तो हम विष्णुकुमार बन सकें॥

- पण्डित लक्ष्मीचन्द

सितम्बर 2022 माह के मुख्य जैन तिथि-पर्व

2 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 6
श्री सुपार्श्वनाथ गर्भ कल्याणक
3 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 7
शील सप्तमी, मुक्तावली व्रत
4 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 8-9 **अष्टमी**
भगवान पुष्पदन्त का निर्वाण कल्याणक
8 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 13
रत्नत्रयव्रत प्रारम्भ
9 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल 14
अनन्त चतुर्दशी
भगवान वासुपूज्य मोक्ष कल्याणक
दशलक्षण व्रत पूर्ण
10 सितम्बर - भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा
रत्नत्रय व्रत पूर्ण
11 सितम्बर - आश्विन कृष्ण 1
क्षमावाणी, सोलहकारण व्रत पूर्ण
12 सितम्बर - आश्विन कृष्ण 2
भगवान नमिनाथ गर्भ कल्याणक
18 सितम्बर - आश्विन कृष्ण 8 **अष्टमी**
24 सितम्बर - आश्विन कृष्ण 14
चतुर्दशी
26 सितम्बर - आश्विन शुक्ल 1
भगवान नेमिनाथ ज्ञान कल्याणक

दशलक्षण पर्व

यह परम पावन दशलक्षण पर्व मुमुक्षु मानव को आत्मशोध और खोज का सन्देश लेकर प्रतिवर्ष सजग प्रहरी की तरह हमारे समक्ष जागृत करने उपस्थित हो जाता है। गाढ़ मोह निद्रा में मग्न अज्ञानी जीव भले ही उससे लाभ न उठाकर इस पावन पर्व का भी दुरुपयोग कर बैठे। किन्तु विवेकी मानव तो इस सुअवसर को कभी भी हाथ से नहीं जाने देगा।

पर्व तो सिर्फ हमें दिशा का निर्देशन ही कर सकते हैं, उस पथ पर चलने या न चलने का काम हमारा है। ये दशधर्म आत्मा के स्वभावरूप गुण हैं, इन्हें कहीं बाहर से नहीं लाना है, और न इनके पालन करने के लिये किसी कष्ट, द्रव्य या सहयोग की आवश्यकता है, क्रोधादि दुर्गुणों पर विजय पाने के लिये भी किसी प्रकार के कष्टादि सहन करने की आवश्यकता नहीं है बल्कि कष्ट तो क्रोध, मान, माया, लोभ, असंयम, असत्यादि दुर्गुणों के आश्रय से होता है। क्षमा, निरभिमानता, निष्कपटभाव और निर्लोभता आदि गुण तो निरन्तर सुखरूप एवं भविष्य में भी सुख शान्ति के प्रदाता हैं। इनसे कभी स्वप्न में भी कष्ट नहीं हो सकता है।

हाँ, यह बात दूसरी है कि इन दुर्गुणों ने चिरकाल से हमारी आत्मा पर इस तरह का अधिकार जमा लिया है, जिससे उनको छोड़ने का अभ्यास हमें कष्टप्रद दिखता है। जिस प्रकार भारतवासियों को पराधीन बनानेवाले अंग्रेजी राज्य को कई बन्धु आज भी सर्वश्रेष्ठ राज्य कहते सुने जाते हैं। इसी प्रकार मन और इन्द्रियों की दासता में रहनेवाले पराधीन ये प्राणी उनकी स्वच्छन्दता और गुलामी में भले ही पराधीन क्षणिक सुख को यथार्थ सुख अनुभव करें, किन्तु स्वतन्त्रताप्रेमी विवेकी मानव को तो ये क्षणिक सुख और यह मन की दासता जहरीले नाग की तरह प्रतिभास होती है। कुछ लोग कहते हैं कि ये दशधर्म तो मुनियों के मूलगुण हैं, उनसे गृहस्थों का क्या सम्बन्ध ?

उत्तर बहुत सीधा और सरल है कि ये दशधर्म तो मुनियों के लिये आवश्यक गुण और वे उसका पूर्ण रूप से पालन करने के अधिकारी हैं, अन्यथा मुनिधर्म भी उनका सदोष और कलंकित हो जाता है। किन्तु वह गृहस्थ भी गृहस्थ नहीं, जो मुनिधर्म को अपने जीवन का उद्देश्य नहीं मानकर उस पर चलने के लिये प्रयत्नशील भी नहीं रहता है। यदि गृहस्थ इन धर्मों को अपने जीवन में अनुपयोगी मानकर चलने लगे तो उसका जीवन महान दु:खरूप बनकर दूभर हो जाये। प्रत्येक प्राणी जितने अंशों में इन धर्मों के किसी अंश का पालन करता है, तभी उसका व्यवहारिक जीवन भी चल सकता है, अन्यथा नागरिक जीवन भी उसका चलना मुश्किल हो जाये। जिस प्रकार कोई क्रोध ही क्रोध निरन्तर करता रहे तो उसका मानव जीवन भी नारकीय जीवन से बदतर हो जायेगा और वह प्राणी अपने और दूसरों को महान दु:ख का कारण बन जायेगा। अत: ये धर्म प्रत्येक गृहस्थ को आवश्यक ही नहीं, कर्तव्यरूप से जीवन के आवश्यक अंग हैं। इसीलिए इन गृहस्थों को इनका पालन अत्यावश्यक है, इसकी सूचना देने के लिये ही दशधर्म के ये दश दिन प्रेरणा देने के लिये बनाये गये हैं। इन दश दिनों में पाठशाला की तरह इन धर्मों का पाठ पढ़कर जीवन के प्रत्येक क्षण में इनको प्रयोग में लाना चाहिए। तभी इन दिनों में व्रत पालन करने एवं दशलक्षण पर्व मनाने की सार्थकता होगी।

दसलक्षण पर्व के अवसर पर धर्मप्रभावना

तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ दसलक्षण पर्व के अवसर पर बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन, पण्डित सुधीर शास्त्री व पण्डित समकित शास्त्री मंगलायतन में ही स्वाध्याय आदि गतिविधियों का लाभ देंगे। इस अवसर पर मंगलार्थी हिमालय जैन, उदयपुर से मंगलायतन पधारेंगे। मंगलायतन से दशलक्षण महापर्व के अवसर धर्मप्रभावनार्थ पण्डित अशोक लुहाड़िया, मोरबी (गुजरात); पण्डित सचिन जैन, गजपंथा सिद्धक्षेत्र एवं डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, भीलवाड़ा पधारेंगे। बाहर से पधारनेवाले साधर्मियों के लिए आवास एवं भोजन की व्यवस्था समुचित रहेगी।

सम्पर्कसूत्र – श्री अशोक बजाज, 9319311708 (ऑफिस)
पण्डित सुधीर शास्त्री, 9756633800

मोक्ष सप्तमी पर विशेष -

भगवान पार्श्वनाथ

बालब्रह्मचारी श्री पार्श्वनाथ गृहस्थ दशा में थे, एकबार नगर के बाहर जाते समय क्या देखा! कि बनारस के उद्यान में एक साधु हठयोग मांडे बैठा था। वह पंचाग्नि तप रहा था। तब यज्ञ और हठयोग का बड़ा जोर था। साधु-जीवन को भ्रष्ट कर रखा था। गृहस्थों की तरह आश्रमों में रहना, साधु नामधारियों में एक चलन हो गया था। माँस और मदिरा से भी उन्हें परहेज नहीं था। यज्ञों के नाम पर पशु हिंसा खूब होती थी। जमाना बड़ा भयानक था। जनता दु:खी थी, सब चाहते थे कि कोई उन्हें आकर बचा ले, आखिर उसकी मनचेती हुई। युगप्रवर्तक राजकुमार पार्श्वनाथ में उन्हें शरण मिल गई।

राजकुमार टहलते हुये उसी बगीचे में आ निकले जिसमें साधु बैठा पंचाग्नि तप रहा था। उन्होंने पहचाना 'यह तो मेरे नाना हैं।' उनका मन उनकी धर्ममूढ़ता पर दु:खी हुआ। और हाँ, उन्होंने अपने ज्ञाननेत्र से यह भी देखा कि जिस लक्कड़ को साधु जला रहा है, उसकी खोल में सांप का एक जोड़ा मरणासन्न हो रहा है। राजकुमार ने साधु को सम्बोधा; किंतु हठी और घमंडी परिव्राजक को यह सहन न हुआ। वह बहुत बिगड़ा, आव गिना न ताव, झट से उठकर कुल्हाड़ी से जलता हुआ लक्कड़ फाड़ने लगा। सचमुच उसमें से बिलबिलाता हुआ सर्प युगल निकल पड़ा। दयालु पार्श्वनाथ ने उन्हें शांतिप्रदायक धर्मवाणी सुनाई; जिसके प्रभाव से वे मरकर नागराज हुये। उनका नाम धरणेन्द्र और पद्मावती प्रसिद्ध हो गया।

साधु यह देखकर कटा तो जरूर, किंतु 'पंचाग्नि तपना' उसने नहीं छोड़ा। राजकुमार पार्श्वनाथ ने बहुत कुछ समझाया व कहा—'ज्ञान के बिना कोरा हठयोग-कायक्लेश कार्यकारी नहीं है। यह पंचाग्नि जीवहिंसा का घर है। भला, हिंसामयी, कार्य में धर्म कैसे हो सकता है?' किंतु मूढ़मति साधु की समझ में कुछ भी न आया।

राजकुमार पार्श्वनाथ लौटकर अपने राजमहल चले आये। यह घटना ई० पूर्व आठवीं शताब्दी में घटित हुई थी। तब बनारस, काशी नामक देश की राजधानी थी और राजा विश्वसेन वहाँ राज्य करते थे। राजकुमार पार्श्वनाथ इन्हीं के सुपुत्र थे। जिससमय राजकुमार पार्श्वनाथ रानी वामादेवी के गर्भ में आये थे, उससमय उन्होंने अच्छे-अच्छे सोलह सपने देखे थे। उनके फलस्वरूप राजा ने जान लिया था कि उनके बड़ा होनहार पुत्र होगा। वह तेईसवें तीर्थंकर होंगे। सचमुच भगवान पार्श्वनाथ 23वें तीर्थंकर ही थे।

तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, दीक्षा, ज्ञान और निर्वाण—इन पाँच सुअवसरों पर देव और मनुष्य आनन्दोत्सव मनाते हैं। यह 'पंच कल्याणकोत्सव' कहे जाते हैं। तीर्थंकर पार्श्वनाथ के समय में भी यह घटित हुए थे।

जब पार्श्वनाथ युवा हुये तो उनके माता-पिता ने चाहा कि इनका ब्याह हो जाये; किंतु वे इस प्रस्ताव पर राजी न हुये। जिनके पवित्र ब्रह्मचर्य का रंग लगा था, फिर वह विवाह कैसे करते ? इसके साथ ही उन्होंने अयोध्या के राजदूत की जुबानी, वहाँ के राजाओं की चरितावली सुनी। भगवान ऋषभदेव की जीवनी ने उन्हें प्रभावित कर दिया। वैराग्य उनके रोम-रोम में समा गया, वह घर छोड़कर वन को चले गये।

दिगम्बर मुनि होकर पार्श्वनाथजी ने घोर तपस्या की। एक रोज वे काशी के पास एक वन में ध्यानमग्न बैठे थे। उनके पूर्वजन्म का विरोधी जीव संवरदेव आकर उन पर घोर उपसर्ग करने लगा। भगवान पार्श्वनाथ ने यह सब पूर्ण शांति से सह लिया, कुछ भी बुरा न माना। उस पर धरणेन्द्र ने आकर अपना फण भगवान के सिर पर फैला दिया, किंतु भगवान तो स्वत: अजेय थे, किसी का जरा भी भला बुरा न माना, न राग-द्वेष उत्पन्न किये। बस संवर (संवर नामक व्यंतरदेव) यह देखकर दंग रह गया, आखिर वह भगवान के चरणों में आ गिरा।

पौष कृष्णा एकादशी को भगवान पार्श्वनाथ साधु हुये थे और इसके चार महीने बाद चैत्र कृष्णा चतुर्दशी को उन्हें सर्वज्ञता प्राप्त हो गई थी। यह संवरदेव

के उपसर्ग के बाद ही हुई थी, अब भगवान सर्वज्ञ तीर्थंकर हो गये थे।

तीर्थंकर पार्श्वनाथजी का देश में चारों ओर विहार होकर धर्मोपदेश हुआ। योग्य जीवों में सद्ज्ञान का प्रचार हुआ और सचमुच उनके धर्मोपदेश से उस समय एक उलटफेर हो गया था। अंधेरा हटाना नहीं पड़ता, प्रकाश होते ही अंधकार उत्पन्न ही नहीं होता; इसप्रकार से निर्मल ज्ञान के प्रकाश द्वारा ही अज्ञानरूपी अंधेरा नष्ट हो जाता है।

ब्रह्मचर्य और अहिंसा की उस समय भी आवश्यकता थी। भगवान पार्श्वनाथ ने इन पर जोर दिया था। जनता को इससे बड़ा संतोष हुआ और भगवान 'जनप्रिय' हो गये। उनका विहार कुरु, कौशल, काशी, अवंती, पुंड्र, मालवा, अंग, बंग, कलिंग, पांचाल, विदर्भ, भद्र, कर्णाटक, भौंकण, मेदपाद, द्राविड़, काश्मीर, शाक, पल्लव आदि देशों में हुआ था।

भगवान पार्श्वनाथ के मुख्य शिष्य स्वयंभू गणधर थे और उनके अतिरिक्त नौ गणधर और थे; ग्यारह अंग चौदह पूर्व के धारी मुनियों की संख्या 350 थीं; दस हजार नौ सौ शिक्षक मुनि थे और एक हजार चार सौ अवधिज्ञानी थे; इसीप्रकार एक हजार केवलज्ञानी थे। एक हजार विक्रियाऋद्धि को धारण करनेवाले थे; 750 मन:पर्ययज्ञानी और 600 वादी थे; इस तरह कुल 16000 मुनि उनके शिष्य थे। उनके संघ में सुलोचना आदि छत्तीस हजार आर्यिकायें थीं, एक लाख श्रावक थे और तीन लाख श्राविकायें थीं।

अंत में भगवान पार्श्वनाथ सम्मेदशिखर पर्वत पर आ बिराजे और वहाँ से श्रावण शुक्ला सप्तमी को मोक्षधाम गये। श्री पार्श्वनाथ आदि सर्व तीर्थंकरों की जय।

[नोट—हमारे कहने से उनकी जय नहीं है। वे तो सब स्वयंभू परमात्मदशा प्राप्त करने से सदा जयवंत ही हैं किंतु हम उनके समान प्रथम निर्मल श्रद्धा-ज्ञान द्वारा वीतरागता-यथार्थता को ग्रहण कर सच्चे बनें, तब तो व्यवहार में जय जिनेन्द्र है, अन्यथा नहीं।] ●

स्वभाव के वेदन में—
परभाव के वेदन की अशक्यता

ज्ञानी-धर्मात्मा विकार का निजभावरूप से वेदन करें—यह अशक्य है। जिसप्रकार आर्य सज्जन को अभक्ष्य का भक्षण अशक्य है, जिसप्रकार ब्रह्मचारी-पुरुष को वेश्या का संग अशक्य है, जिसप्रकार सती स्त्री को परपुरुष का संग अशक्य है, उसीप्रकार भेदज्ञानी धर्मात्मा को एकत्वबुद्धि से परभाव का संग भी अशक्य है; वे तो असंग एकत्वस्वभाव की भावना में रत हैं और जगत से उदासीन हैं।

[समयसार-सर्व विशुद्धज्ञान अधिकार के प्रवचन से]

*** ज्ञानी की विचक्षणता**

आत्मा चैतन्यस्वभावी पवित्र वस्तु है, वह शरीरादि परद्रव्य से पृथक् है। पर की पृथक्ता है, विभावों की विपरीतता है, और स्वभाव का अपार सामर्थ्य है।—ऐसे आत्मा को जो जानता है, वही विचक्षण ज्ञानी है। इसके सिवा जगत की अन्य विचक्षणता आये अथवा न आये, उसकी यहाँ बात नहीं है। जगत की विचक्षणता और चतुराई कहीं आत्मा के जानने में काम नहीं आते; और जगत की बाहर की विचक्षणता न हो, उससे कहीं आत्मा को जानने का काम नहीं अटकता। जीव को अपने अस्तित्व का स्वीकार यथार्थ आना चाहिये। जो विकार में या पर में ही अपना अस्तित्व मानता है, उसकी बुद्धि विचक्षण नहीं है किन्तु स्थूल है—मिथ्या है। चैतन्य को जगत से भिन्न जाननेवाले ज्ञानी ही सूक्ष्मबुद्धिवन्त विचक्षण हैं। ज्ञानी की अपूर्व विचक्षणता को अज्ञानी पहिचान नहीं सकता।

*** ज्ञानी को परभाव के वेदन की अशक्यता**

ज्ञान-दर्शन से भरपूर आनंदस्वभाव जहाँ अनुभव में आया, वहाँ परिणति विकार से पृथक् हुई; अब वह ज्ञानी विकल्प को स्वभाव में नहीं अपनाता। वह विकल्प को निजस्वभाव से विपरीत समझता है, इसलिये

उस विकार का वह ज्ञानी निजभावरूप से वेदन करे—यह बात अशक्य है। जिसप्रकार आर्य सज्जन को माँस का आहार अशक्य है, उसीप्रकार स्वभाव के लिये अभक्ष्य ऐसे जो परभाव, उनका ज्ञानी निजस्वभावरूप से वेदन करे—यह बात अशक्य है। माँस पिण्ड ऐसे इस शरीर को जो अपना मानता है, उसे परमार्थ से माँस भक्षण के समान गिना है। जिसप्रकार ब्रह्मचारी को वेश्या का संग अशक्य है, जिसप्रकार सती स्त्री को पर पुरुष का संग अशक्य है, उसीप्रकार संत-धर्मात्मा को एकत्वबुद्धि से परभावों का संग भी अशक्य है। मैं ज्ञानभाव हूँ, उस ज्ञानभाव में मुझे परभावों का कर्तृत्व या भोक्तृत्व नहीं है।

*** अज्ञानी विकार का ही वेदन करता है**

भगवान आत्मा तो चैतन्यस्वभाव से भरपूर सारभूत पदार्थ है, पवित्र और सुंदर है; तथा विकारी परभाव तो अशुद्ध मलिन एवं असार हैं।—ऐसा जानते हुए ज्ञानी निजस्वभाव में निरत-लीन होते हैं और विभावों से विरत होते हैं, विरमते हैं; जबकि अज्ञानी तो निजस्वभाव को भूलकर प्रकृति के स्वभाव में अर्थात् संयोग तथा रागादि परभावों में ही लीन होकर आत्मबुद्धिपूर्वक वर्तता है। इसलिये वह मिथ्यादृष्टि सदा विकार का ही वेदक है; उसे स्वभाव के आनंद का वेदन नहीं है।

रागादि भाव हैं, वे स्वभाव की—अंतर की वस्तु नहीं हैं, परंतु आगंतुक भाव हैं, वे क्षण में चले जाते हैं। उनकी जड़ें स्वभाव की गहराई तक नहीं हैं। परंतु अज्ञानी उस विकार के वेदन में एकाकार वर्तता हुआ मानों—मैं पर का वेदन करता हूँ—शरीर की वेदना का वेदन करता हूँ—ऐसा मानता है; और कदाचित् मंदराग से सहन करे, तो मैं इस शरीर की वेदना को सहन करता हूँ—ऐसा मानता है; ज्ञानी तो जानते हैं कि बाह्य संयोग मुझे स्पर्श ही नहीं करते, फिर उनका वेदन मुझे कैसा ?

*** सिद्ध भगवंतों की पंक्ति में**

मैं अमृत स्वाद से छलाछल भरा हुआ चैतन्य कलश हूँ;—ऐसी

चैतन्यमहिमा की महत्ता के निकट ज्ञानी को जगत में अन्य किसी की महत्ता नहीं आती। जैसा सिद्ध भगवान का सम्यक्त्व, वैसा ही चौथे गुणस्थानवर्ती जीव का सम्यक्त्व, दोनों की स्वभाव की प्रतीति में कोई अंतर नहीं है। जैसा स्वभाव सिद्ध भगवान की प्रतीति में है, वैसा ही स्वभाव चौथे गुणस्थानवर्ती की प्रतीति में है, उसमें रंचमात्र अंतर नहीं है। अहा, साधक निजस्वभाव की प्रतीति के बल से सिद्धभगवंतों की पंक्ति में बैठा है, प्रतीति में पूर्ण चैतन्यस्वभाव की स्थापना करके वह सिद्धपद को साध रहा है।

*** ज्ञानी चैतन्य-महल में निवास करते हैं**

भाई, इन बाहर के बंगलों से तो तुझे बाहर निकलना पड़ेगा; तू अंतर के चैतन्य महल में प्रवेश कर... वह तेरा अविनाशी विश्रामस्थल है। चैतन्यरस से भरपूर आत्मा ही धर्मी का निवास स्थान है, उसके स्वाद का अनुभव ही धर्मी आहार है। आचार्यदेव कहते हैं कि—हे निपुण पुरुषों! ज्ञान में विकार का वेदन नहीं है, ऐसा निर्णय करके तुम अज्ञानता को छोड़ो, विकार के वेदन को छोड़ो और शुद्धज्ञान के वेदन में उपयोग को लगाओ, यही चारों अनुयोगों का तात्पर्य है। ज्ञानी चैतन्य महल में प्रविष्ट होकर निजानन्द का वेदन करते हैं; अज्ञानी चैतन्यस्वरूप निजगृह को भूलकर बाहर परभावों में भटकता है और दुःख का वेदन करता है।

*** शुद्धात्मभावरूप भावश्रुत**

शास्त्र ज्ञानस्वभाव में एकता करने को तथा राग में एकता छोड़ने को कहते हैं; भावश्रुत द्वारा शुद्धचैतन्य का वेदन करना चाहिये और विकार का वेदन छोड़ना चाहिये;—ऐसा दर्शानेवाले द्रव्यश्रुत ही सच्चे द्रव्यश्रुत हैं। कोई जीव ऐसे द्रव्यश्रुत को तो पढ़े, 'शास्त्र ऐसा करने को कहते हैं'—ऐसा तो जाने, परंतु स्वयं भावश्रुतज्ञानरूप परिणमित होकर शुद्धात्मा का संचेतन न करे, अनुभव न करे तो शुद्धात्मज्ञान के अभाव से वह अज्ञानी ही है और अज्ञान से वह विकार का कर्ता-भोक्ता ही है। ज्ञानी को शुद्धात्मज्ञानरूप भावश्रुत प्रगट हुआ है और इसलिये उसे समस्त कर्मफल के प्रति अत्यंत

विरक्तभाव वर्तता है, इसलिये वह कर्मफल का अभोक्ता ही है। भावश्रुतज्ञान में ऐसी योग्यता नहीं है कि विकार का वेदन करे। जिसप्रकार विकारभाव में ऐसी योग्यता नहीं है कि वह मोक्ष का कारण हो, उसीप्रकार ज्ञानी के भावश्रुत में ऐसी योग्यता नहीं है कि वह विकार का वेदन करे।

*** मोक्ष का साधक भावश्रुत**

शुद्धात्मज्ञान को यहाँ भावश्रुत कहा, उसमें मोक्षमार्ग समा जाता है; सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यग्चारित्र—यह तीनों शुद्धात्मा के अनुभवरूप भावश्रुत में आ जाते हैं।—ऐसा भावश्रुत, वह मोक्ष का साधक है। ऐसा भावश्रुत, वह शुद्धात्मा के आश्रित है; जितना स्वाश्रयभाव है, उतना ही मोक्ष का कारण है; किंचित् भी पराश्रयभाव, वह मोक्ष का कारण नहीं है।

*** सम्यग्दर्शन में ज्ञानी का उपकार**

सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की जिसकी योग्यता है, उसे साक्षात् ज्ञानी का आत्मा तथा उनकी वाणी निमित्त है। सम्यग्दर्शन तो स्वयं भावश्रुतरूप से परिणमित होकर शुद्धात्मा का अनुभव करे तब होता है, परंतु उसमें निमित्त की भी यह विशेषता है कि निमित्तरूप से भी भावश्रुतरूप परिणमित आत्मा की ही देशना होती है। इसप्रकार ज्ञानी के भावश्रुत की पहिचान, वह भावश्रुत का कारण है। ऐसे भावश्रुत से रहित तो सब कुछ भाररूप है।

*** शांति का वेदन कब ?**

ज्ञान के वेदन में ही शांति है; दुनियाँ की आकुलता के विकल्प कम हों और राग की किंचित् मंदता हो, वहाँ उस मंदराग के वेदन में (साता वेदन में) एकाकार होकर अज्ञानी उसे शांति का वेदन मानता है, परंतु वह कहीं शांति नहीं है, वह तो राग का ही वेदन है। राग स्वयं आकुलतारूप-अशांत है, तो उसके वेदन में शांति कैसी ? राग से पृथक् होकर ज्ञान के वेदन में आये, तभी शांति का वेदन होता है। जिसे राग से भिन्नता का भान भी नहीं है, उसे शांति का वेदन कैसा ? भेदज्ञान करके राग से भिन्न ज्ञान में उपयोग को लगाये, तभी स्वभाव की अतीन्द्रिय अपूर्व शांति का वेदन होगा। ●

श्री समयसार नाटक पर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के
धारावाही प्रवचन

द्वितीय अधिकार

श्रीगुरु की पारमार्थिक शिक्षा

भैया जगवासी तू उदासी व्हैकैं जगतसौं,
एक छ महीना उपदेस मेरौ मानु रे।
और संकलप विकलपके विकार तजि,
बैठिकैं एकंत मन एक ठौरु आनु रे।।
तेरौ घट सर तामैं तूही है कमल ताकौ,
तूही मधुकर व्है सुवास पहिचानु रे।
प्रापति न व्है है कछु ऐसौ तू विचारतु है,
सही व्है है प्रापति सरूप यौंही जानु रे ।।3।।

अर्थः– हे भाई संसारी जीव! तू संसार से विरक्त होकर एक छह महिने के लिये मेरी सीख मान, और एकान्त स्थान में बैठकर राग-द्वेष की तरंगें छोड़ के चित्त को एकाग्र कर, तेरे हृदयरूप सरोवर में तू ही कमल बन और तू ही भौंरा बनकर अपनी स्वभाव की सुगंध ले। जो तू यह सोचे कि इससे कुछ नहीं मिलेगा, सो नियम से स्वरूप की प्राप्ति होगी; आत्मसिद्धि का यही उपाय है ।।3।।

विशेष– यह पिंडस्थ ध्यान है। अपने चित्तरूप सरोवर में सहस्र दल का कमल कल्पित करके प्राणायाम किया जाता है जिससे ध्यान स्थिर होता और ज्ञानगुण प्रगट होता है ।।3।।

काव्य – 3 पर प्रवचन

अब इस दूसरे कलश में (तीसरे काव्य में) श्रीगुरु पारमार्थिक शिक्षा देते हैं–

'भैया!' –ऐसा सम्बोधन करके बनारसीदासजी लिखते हैं कि जगवासी अर्थात् राग और संसार में रहा हुआ है उससे उदास होकर एक छह

माह मेरा उपदेश मान! छह माह अन्तर में घर्षण कर! जैसे बादाम का तेल निकालना हो तो उसको एक धारा लसोटना (घिसना) चाहिए। दो-चार बार घिसकर अन्य कार्य करने लग जाये तो ऐसे तेल नहीं निकलता। उसीप्रकार आत्मा की अनुभूति करना हो तो एकबार छह माह तक आत्मा के लक्ष्य को घिस। वैसे तो सम्यग्दर्शन अन्तर्मुहूर्त में भी हो जाता है और न होवे तो अनन्तकाल बीतने पर भी नहीं होता; परन्तु यहाँ तो मध्यम बात करके इसको धैर्य दिलाया है। इसे कठोर न लगे इसप्रकार बात की है। यह अलग-अलग आठ प्रकार से कोई अध्यवसान में आत्मा मानता है, कोई राग में आत्मा मानता है इत्यादि प्रकार से आत्मा के स्वरूप की मिथ्याकल्पना करता है- इस बात की गाथा के बाद का यह श्लोक है।

एक आत्मा का अनुभव कर! इसके सिवाय समस्त संकल्प-विकल्पों को छोड़ दे। मैं दूसरों को समझा दूँ, दुनिया के काम कर दूँ- ऐसे समस्त संकल्प-विकल्प छोड़ दे। जो विकल्प है वहीं संसार है, उन्हें तो छोड़े नहीं और स्त्री-पुत्रादिक को छोड़े, उससे कोई संसार नहीं छूटता। जिसको पंचमहाव्रत के परिणामों के साथ एकताबुद्धि है, वह पक्का संसारी है। प्रवचनसार में कहा है कि जिसको आस्रव और अजीव में एकत्व है, वह पक्का संसारी है। आस्रव माने पुण्य-पाप के विकल्प और अजीव माने इस शरीर में जिसको एकताबुद्धि है, वह स्त्री-पुत्रादिक को छोड़ आया होवे तो भी संसारी है।

देखो तो सही! कितनी सुख-सुविधायें छोड़कर आया है, गर्म-गर्म भोजन करता, अनेकप्रकार की अनुकूलता मिलती, वह सब त्यागकर आया तो भी संसारी? हाँ! वह संसारी ही है; क्योंकि वह स्वयं जिसको छोड़कर आया -ऐसा मानता है, वे सब तो अपने से छूटे हुए भिन्न ही थे; यह तो मात्र अभिमान करता है कि 'मैंने छोड़ा।' इसको उनमें जो एकत्वबुद्धि है, वह संसार है। राग के उदय भाव की एकता वह संसार है। मैं उससे पृथक् हूँ भाषा में ऐसा कहना सरल है; परन्तु अन्दर से विरक्त होने में बहुत पुरुषार्थ चाहिए।

संकल्प-विकल्प विकार को तजकर, एकान्त में बैठकर मन को एक आत्मा की ओर ला! एक आत्मा ही आनन्दस्वरूप है उसमें मन को जोड़! रमेशभाई ने (भजन में) लिखा है न!

मनरूप हिरण को वापिस मोड़ना रे लाल...
इसे जोड़ दो आतम सरोवर में आज;
तुझे मिलेगा आतमसुख अनमोल रे लाल...।

व्याख्यान में आई हुयी बात भजन में उतार दी है। देशी रास के राग में जोड़ दिया है, अत: गाना भी सरल पड़ता है।

संकल्प-विकल्प से लेकर सम्पूर्ण दुनिया तुझसे भिन्न है और तू उससे भिन्न है। तू तो आनन्द-सरोवर है। 'तेरो घट सर तामैं तू ही है कमल ताकौ तूही मधुकर व्है सुवास पहिचानु रे।' तू स्वयं चैतन्य सरोवर है। उसमें तू ही कमल है और तू ही भंवरा होकर उसकी सुगन्ध ले। अनादि से तूने संकल्प-विकल्परूप जहरीले भावों की सुगन्ध ली है, उसको छोड़कर अब चैतन्य-कमल की सुगन्ध ले और उसी में लीन हो जा! तू तो आनन्द का नंदनवन है ऐसे स्वभाव की सुगन्ध ले। (आत्मा) शुद्ध ज्ञानघन सरोवर है, उसमें एकाकार होना; वह कमल है, उसकी सुगन्ध लेना सो धर्म है। जो चैतन्य-सरोवर को छोड़कर पुण्य-पाप के मृगजल में पानी पीने दौड़ता है, उसको सच्चे ज्ञान का पानी नहीं मिलेगा।

अरे! यह पुण्य-पाप के संकल्प-विकल्प के आड़ में अपने भगवान को देखने के लिए निवृत्त ही नहीं होता। उससे कहते हैं..

मनरूपी हिरण को वापिस मोड़ना रे लाल...जोड़ दो आतम सरोवर में आज, इसे मिलेगा आतमसुख अनमोल रे लाल..।

भगवान! तू तो अतीन्द्रिय आनन्द से भरा हुआ सरोवर है, उसमें से पानी पी और पुण्य-पाप के विकल्परूप मृगजल के लिए दौड़ना बंद कर; क्योंकि उनमें तुझे आत्मा की शान्तिरूप जल नहीं मिलेगा।

देखो, यह बोर्डिंग आदि के पैसे उगाहने के विकल्प मृगजल है- ऐसा

कहा है। यदि इस मनुष्यभव में अपनी वस्तु को समझने का प्रयत्न नहीं किया तो सब धूल-धाणी (व्यर्थ) है।

'तेरो घट सर..' अहा..! बाल-गोपाल सबके शरीर के भीतर अमृत सरोवर है। यह जो शरीर दिखता है, वह तो मृतक कलेवर है; भगवान आत्मा इसमें मूर्छित होने से दु:खी है। स्वयं अमृतस्वरूप होने पर भी मृतक (शरीर) में मूर्छित होने से दु:ख का वेदन है। भाई! तू ही सरोवर है और तू ही कमल है। इस कमल के खिलने में कारण भी तू ही है। तू ही इस कमल की सुगन्ध ले, वह तुझे सुख का कारण है। तूने पुण्य-पाप के विकल्प की वासना तो अनन्तबार की है, वह कोई नई नहीं है।

अब कहते हैं कि-'भैया जगवासी तू उदासी व्है कै जगत सौं, एक छः महीना उपदेश मेरो मान रे'-तूने अनन्तकाल में बहुत होली की है। अब एक छह महीना मेरा उपदेश मानकर सच्ची दीवाली कर।

'प्रापति न व्है है कछु ऐसौ तू विचारतु है'-तू ऐसा विचारना छोड़ दे कि यह आत्मवस्तु मुझे प्राप्त नहीं होगी। क्या तेरी वस्तु तेरे से भिन्न रहे? तू सावधान होकर अन्दर में जायेगा तो अवश्य तेरी वस्तु तुझे मिल जायेगी। शुभ-अशुभभाव में तेरी प्राप्ति नहीं है। उनसे रहित स्वभाव में तेरी प्राप्ति है। इसलिए शुभाशुभभाव के बिना (मुझे) मेरी प्राप्ति कैसे हो यह मानना छोड़ दे। तू उनसे रहित ही है।

लोगों को ऐसा लगता है कि यह किस प्रकार का धर्म है। पैसा खर्च करो..दान करो.. व्रत पालो..कॉलेज बनाओ..दवाखाना बनाओ..चंदा करो तो धर्म का लाभ हो- ऐसा वे मानते हैं; परन्तु भाई! धर्म का स्वरूप ऐसा नहीं है। आत्मा का धर्म आत्मा में होता है। राग से आत्मा को धर्म अथवा सुख नहीं होता है।

बहुत थोड़े शब्दों में गंभीर भाव भरे हैं। भगवान आत्मा अन्दर में सत् चिदानन्द स्वरूप शाश्वत वस्तु है...उसमें आनन्द और शान्ति आदि की शक्ति पड़ी है वह कैसे प्राप्त नहीं हो? जरूर प्राप्त होती ही है। इसलिए प्राप्त

नहीं होती ऐसा विचार मत कर, स्वरूप की प्राप्ति नियम से होगी ही ।

'मैं मुझे प्राप्त होऊँगा या नहीं' ऐसा तुझको क्या हुआ है भाई! ऐसी शंका मत कर! 'मैं नहीं' ऐसा कहता है, वह किसके अस्तित्व में खड़ा रहकर कहता है? 'मैं नहीं' ऐसा निर्णय (ज्ञान) करनेवाला ही तू है। चैतन्य की भूमि ही तू है और तुझको तेरी प्राप्ति भी तेरे से ही होती है। उसकी कला तो सहज है, परन्तु तूने उस कला को सुना नहीं है और कदाचित् सुना हो तो भी लक्ष्य में नहीं लिया है। साधु हुआ, बाबा हुआ, फकीर हुआ, मरण तुल्य कष्ट सहन किये, सूख गया। नंगे पैर चले, लौंच करे, प्यासा रहे; परन्तु भाई! यह वस्तु ही अलग है, उसका भान नहीं किया। यह तेरी वस्तु तो सहज आनन्द की मूर्ति है।

अपना सहज स्वभाव आनन्दमय है, वह दुःखरूप नहीं है, अजीवरूप नहीं है, विकल्परूप नहीं है। इसलिये तू उसको अजीव से भिन्न जानकर आनंदसरोवर में खिले हुए कमल की सुगन्ध भँवरा होकर ले। स्वभाव में ध्रुव आनन्द विद्यमान है, उसकी सुवास ले। जिसकी बाहर में बहुत इज्जत हो उसकी सुवास (ख्याति) अच्छी है ऐसा कहा जाता है; परन्तु वह सुवास नहीं है। पागल जैसे संसार की रुचिवाले मनुष्य तेरी महिमा करे और अभिनंदन दे, उसमें तेरी सुवास नहीं है। भाई! तेरी सुवास और अच्छापना कोई अलग ही है।

यहाँ तो यह कहना चाहते हैं कि पुण्य-पाप भाव में सुख नहीं है; क्योंकि वे अजीवभाव हैं; वे जागती चैतन्यज्योति के भाव नहीं हैं। जैसे शरीर भिन्न है; उसीप्रकार वे भाव भी, उनमें चैतन्य की जागृति नहीं होने से, तेरे स्वरूप से भिन्न है। शरीर और विकल्प से भिन्न चैतन्यस्वरूप की दृष्टि हो और स्वरूप प्राप्त न हो ऐसा नहीं होता। स्वरूप प्राप्त होता ही है। इसलिए प्राप्त होगा या नहीं -यह शंका छोड़ देना।

'सही व्हैं है प्रापति सरूप यौही जानु रे' -नियम से स्वरूप की प्राप्ति होगी ही यह विश्वास रखना। यही आत्मसिद्धि का उपाय है। तूने अनादि

से दया, दान, व्रत, भक्ति को आत्मसिद्धि का उपाय माना है, वह उपाय नहीं है।

यह पिण्डस्थ ध्यान की बात है। पिण्ड अर्थात् शरीर, उसमें रहनेवाले आत्मा का ध्यान करना मुक्ति का उपाय है। जो थोड़े से गुणगान होने पर वहाँ प्रसन्न होकर अच्छापना मानकर फूल जाता है, उसको यह बात कैसे जँचेगी ?पाँच-पच्चीस हजार रुपये हों और खर्च करे तथा मृत्यु के समय बिना किसी से सेवा कराये मर जाए तो लोग बखान (महिमा) करते हैं कि इसने तो जीना भी जाना और मरना भी जाना। भाई! यह जीवन नहीं है। जीवन जीना उसको कहा जाता है कि जिसने आत्मा के चैतन्य आनन्द से जीवन जिया हो; वस्तुतः उसी का जीवन सफल है। पुत्र हो, धन हो, मकान हो, प्रतिष्ठा हो इसमें जीवन की सफलता नहीं है, इसमें तो आकुलता है।

अहो! चैतन्य भगवान एक वस्तु है, इसलिए उसमें अनन्त-अनन्त गुण अथवा शक्तियाँ हैं। समयसार में 47 शक्तियाँ कही हैं। आत्मा ऐसी-ऐसी अनन्त शक्तियों का सरोवर है। उसकी दृष्टिरूप कमल खिलने पर जो शुद्धता की सुवास प्रकट होती है उसका स्वाद तू ले।

पहले भगवान आत्मा को जगा। भगवान को जगाये बिना कितनी भी क्रिया कर वे खोटी हैं। यहाँ पाठ में भगवान को जगाने के लिए छह महीना कहा है, वह सामान्य कथन है। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति का जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है। 48 मिनिट में सम्यक्त्व हो जाता है और देरी लगे तो अनन्तकाल में भी होता है; परन्तु शिष्य को मार्ग में लगाने की दृष्टि से जघन्य और उत्कृष्ट काल न बताकर छह महीने के लिए प्रेरणा की है। छह महीने एकान्त स्थान में बैठकर राग-द्वेष की तरंगें छोड़कर चित्त को एकाग्र कर। यथार्थ पुरुषार्थ करेगा तो आत्मा अवश्य प्राप्त होगा। जैसी लगन संसार में लगायी है, वैसी आत्मा में लगन लगा। आत्मा की ही धुन..धुन., आनन्दस्वरूप के शोध की धुन लगा। अविरलधारा से ऐसी धुन छह महीने रहेगी तो तुझको आत्मा का भान हुए बिना नहीं रहेगा। क्रमशः

दशलक्षण पर्व में, मुगल शासक की अहिंसा घोषणा

जलालुद्दीन 'अकबर' शाह बादशाह गाजी का फरमान

''मालवा के मुत्सद्दियों को विदित हो कि चूंकि हमारी कुल इच्छायें इसी बात के लिये हैं कि शुभाचरण कि जायें और हमारे श्रेष्ठ मनोरथ एक ही अभिप्राय अर्थात् अपनी प्रजा के मन को प्रसन्न करने और आकर्षण करने के लिये नित्य रहते हैं।''

इस कारण जब कभी हम किसी मत वा धर्म के ऐसे मनुष्यों का ज़िक्र सुनते हैं, जो अपना जीवन पवित्रता से व्यतीत करते हैं, अपने समय को आत्मध्यान लगाते हैं और जो केवल ईश्वर के चिन्तवन में लगे रहते हैं तो हम उनकी पूजा की बाह्य रीति को नहीं देखते और केवल उनके चित्त के अभिप्राय को विचार के उनकी संगति करने के लिये हमारे तीव्र अनुराग होता है और ऐसे कार्य करने की इच्छा होती है जो ईश्वर को पसन्द हो। इस कारण हरिभद्रसूरि और उनके शिष्य जो गुजरात में रहते हैं और वहाँ से हाल ही में यहाँ आये हैं। उनके उग्रतप और असाधारण पवित्रता का वर्णन सुन कर हमने उनको दरबार में आने की दरख्वास्त की है और वे आदर के स्थान को चूमने की आज्ञा पाने से सम्मानित हुए हैं —

''अपने देश को जाने के लिए विदा (रुखसत) होने के पीछे उन्होंने निम्नलिखित सलाह दी।

यदि बादशाह, जो अनाथों का रक्षक है, यह आज्ञा दे दे कि भादों मास के बारह दिनों में जो पजूषन (पर्यूषण) कहलाते हैं; और जिनको जैनी विशेषकर के पवित्र समझते हैं, कोई जीव उनके नगरों में न मारा जाय, जहाँ उनकी जाति रहती है, तो इससे दुनिया के मनुष्यों में उनकी प्रशंसा होगी। बहुत से जीव वध होने से बच जायेंगे और सरकार का यह कार्य परमेश्वर को पसन्द होगा और चूंकि जिन मनुष्यों ने यह प्रार्थना की है, वे दूर देश से आये हैं और उनकी इच्छा हमारे धर्म की आज्ञाओं के प्रतिकूल नहीं है, वरन्

उन शुभ कार्यों के अनुकूल ही है, जिनका माननीय और पवित्र इस्लाम ने उपदेश किया है, इस कारण हमने उनकी प्रार्थना को मान लिया और हुक्म दिया कि उन बारह दिनों में जिनको पजूषन (पर्यूषण) कहते हैं किसी जीव की हिंसा न की जावे।

यह आज्ञा सदा के लिये कायम रहेगी और सबको यह आज्ञा पालन करने और इस बात का यत्न करने के लिये हुक्म दिया जाता है कि कोई मनुष्य अपने धर्म सम्बन्धी कार्यों के करने में दु:ख न पावे।

— वा हुक्म बादशाह अकबर शाह ग़ाज़ी

(मिती ७ जमादुलसानी सन् ९९२ हिज़री)

प्रेरक-प्रसंग

डॉ. राजेन्द्रबाबू और अँग्रेज

एक बार डॉ. राजेन्द्रप्रसाद नौका में बैठकर अपने गाँव जा रहे थे। उनके पास ही एक अँग्रेज अधिकारी बैठा हुआ था, जो सिगरेट पी रहा था। काफी देर तक तो राजेन्द्रबाबू सिगरेट के धुएँ की गंध सहते रहे। बाद में वे अँग्रेज अधिकारी से बोले – ' सिगरेट जो आप पी रहे हैं, क्या आपकी है?'

अँग्रेज अधिकारी ने घूरते हुए कहा – 'मेरी नहीं तो क्या तुम्हारी?'

तो फिर यह धुआँ भी आपका ही है। इसे आप अपने पास सँभाल कर रखो। इसे क्यों दूसरों पर फेंकते हो', डॉ. राजेन्द्रबाबू बोले। राजेन्द्रबाबू का करारा जवाब सुनकर उस अँग्रेज अधिकारी को आखिर सिगरेट फेंकनी पड़ी और साथ ही लज्जित भी होना पड़ा।

शिक्षा – किसी अप्रिय घटना पर उत्तेजित होने की बजाय, धैर्यपूर्वक उचित प्रत्युत्तर देने पर जहाँ सामनेवाले को सीख मिलती है, वहीं विवाद से भी बचा जा सकता है।

महाकवि पुष्पदन्त

महाकवि पुष्पदन्त ११वीं शताब्दी के महान कवि हो गये हैं। आप काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। आपके पिता श्री केशव और मातुश्री मुग्धा थीं। आरम्भ में माता-पिता शिवभक्त थे परन्तु कुछ कालोपरान्त आप जैन हो गये। इनके पुत्र पुष्पदन्त प्रकाण्ड विद्वान हुए। यद्यपि पुष्पदन्त सामान्य कुल में उत्पन्न हुए थे परन्तु वह धन-सम्पत्ति, घर द्वार के आकांक्षी नहीं रहे। जीवन भर वे अकिंचन रहे।

आत्मगौरव

आप अपनी धुन ही में मग्न रहते थे। आपको अपने विरुद्ध जरा भी दखलंदाजी पसन्द न थी। आप अनेकों राज-दरबारों में रहे परन्तु वे किसी राजा के प्रशंसक या चापलूस के रूप में नहीं रहे; और न उन्होंने अपने आश्रय दाता के लिए, वीरगाथा काल या रीतिकाल के कवियों के सदृश्य प्रशंसा ग्रन्थ रचे। पहले आप भैरव या वीरराय नामक किसी राजा के आश्रय में रहे परन्तु राज्य-व्यवहार से असन्तुष्ट और रुष्ट होकर वहाँ से चले आये। मान्यखेट के राजा राष्ट्र-कूट नरेश कृष्णा (तृतीय) थे, इनके मन्त्री श्री भरत थे। श्री भरत के आग्रह से आप उनके 'शुभतुंग-भवन' में रहे। भरत के अनुरोध पर ही पुष्पदन्तजी ने काव्य रचना की थी।

सरस्वती का वरद पुत्र

आपको मानो सरस्वती का वरदान प्राप्त था। काव्य के सभी अंगों का ज्ञान प्राप्त था। काव्य के सभी अंगों का इन्होंने अत्यन्त सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया। अलंकारादि तो उनकी भाषा में स्वयमेव अत्यन्त आकर्षक रूप में आ ही जाते थे।

आपकी प्रमुख रचनाएँ—महापुराण, नागकुमार चरित्र, यशोधरचरित्र आदि हैं। महापुराण तो कवि की अमर रचना है। यह उनका सबसे बड़ा काव्यग्रन्थ है। इन्होंने उसे शक संवत् 965 में रचकर समाप्त किया था। स्वयं

कवि के शब्दों में ''इस रचना में प्राकृत के लक्षण, समस्त नीति, छन्द, अलंकार, रस, तत्त्वार्थनिर्णय सब कुछ आ गया है। यहाँ तक कि जो इसमें है, वह अन्यत्र नहीं है।'' महाकवि केशव की भाँति ही उन्होंने यह घोषणा गर्व पूर्वक की थी। इससे महाकवि पुष्पदन्त के प्रकाण्ड पांडित्य का पता स्पष्ट रूप से लग जाता है। अपनी इस रचना की महान सफलता की कवि ने यह घोषणा करके मानों समस्त कवियों को यह चुनौती दे दी थी कि वे इससे सुन्दर रचना नहीं रच सकते। यह गर्व केवल गर्व ही नहीं किन्तु पूर्ण सत्य है।

कथन शैली

कविवर के शब्दों में धर्म का स्वरूप सुनिये—

''पुच्छियउ धम्म जइ वज्जरइ,
जो सयलहं जीवह दय करइ।
जो अलियपयं पणु परिहरइ,
जो सच्च सउच्चरेइ करइ॥''

यति से भक्त पूछता है 'धर्म क्या है ?' महाराज! उत्तर में यति ने समाधान किया :—'धर्म वह है जिसमें जीवों पर दया की जाय और अलीक वचन का परिहार करके जहाँ सुन्दर सत्य-सम्भाषण में आनन्द मनाया जाये।''

कितना सुन्दर सरल लक्षण है धर्म का, धन्य!

धर्म आखिर कहाँ है ?—इसका भी उत्तर देखिये—कितना सुन्दर है!

''वज्जइ अदत्तु णियपिखणु,
जो ण घिवउ परकलते णायणु।
जो परहणु गणइ,
जो गुणवतउ भत्तिए शुणइ॥''

''जहाँ बिना दी हुई वस्तु ग्रहण न की जाती हो और जहाँ परस्त्री पर आँख न उठाई जाती हो, मनुष्य अपनी स्त्री से ही सन्तुष्ट हो, वहाँ धर्म है। जहाँ पराया धन तृण सदृश्य देखा जाय और जहाँ गुणवानों की भक्ति की जाय वहाँ भी धर्म है।''

और संसार की असारता देखिये:—

''णियकंतिहे ससि बिंबु वि ढलइ।
लायण्णु ण मणुयहे किं गलइ॥''

जब चन्द्रमा की कान्ति ढल जाती है तो भला मनुष्य का लावण्य क्यों न ढलेगा?

(अर्थात् इस काया या चोले का घमण्ड न करो, आत्मा को शुद्ध लावण्यमयी बनाओ, वही उपादेय है, अन्य नश्वर है।)

अब जरा नीति पर भी कविवर के विचार सुनिये:—

युद्ध और पौरुष कहाँ उपादेय (उपयुक्त) हो सकते हैं? और सौजन्यता किस बात में है तथा दु:ख कहाँ सहना चाहिए यह भी कवि की वाणी में सुनिये:—

'रणु चंगउ दीणपरिग्गहेण,
संयणत्तणु सज्जन गुण गहेण।
पोरिसु सरणाइय रक्खणेण,
दुक्खु विं चंगउ सुतवें कएण॥''

अर्थात् दीन या गरीबों की रक्षा हेतु लड़ना उत्तम है, सज्जन पुरुष के गुण ग्रहण करने में सौजन्यता है, शरणागत की रक्षा में पौरुष दिखलाना श्रेष्ठ है और कठिन तप करने में ही दु:ख सहना उपादेय है।

अलंकारों, रस तथा शब्द गुम्फन में कवि की तुलना अन्यत्र की जाना दुर्लभ ही प्रतीत होती है। 'महाकवि अपने फन में एक ही थे।' उनका काव्य युगों-युगों तक उसी प्रकार प्रकाशित होता रहेगा, जिस प्रकार की सूर्य और चन्द्र। परन्तु सूर्य और चन्द्र की कान्ति तो ढल जाती है, पर इस महान् काव्य की कान्ति भला कैसे और कब ढल सकती है। नहीं वह सदैव एक सी ही गति से जगमग-जगमग होता रहेगा। हाँ, उसके अधिक प्रसारण के लिए उसका सर्वसाधारण में प्रकाशन उचित है, जिसके लिए उनके ग्रन्थों का प्रकाशित होना अनिवार्य है।●

"जिस प्रकार–उसी प्रकार" में छिपा रहस्य

जिस प्रकार– आंधी चल रही हो तो दरवाजे–खिड़की बन्द करके बैठ सकता है।

उसी प्रकार– कर्मोदय चल रहा हो जीव अपने उपयोग को समेटकर शांत रह सकता है। इन्द्रियरूपी खिड़कियों को बन्द करने में जीव स्वतंत्र है।

जिस प्रकार– बच्चों को खिलाने–पिलाने की जिम्मेदारी माँ–बाप की है।

उसी प्रकार– बच्चों में अच्छे संस्कार डालने की जिम्मेदारी माँ–बाप की है।

जिस प्रकार– विवाहस्थल पर सब तैयारी उत्तम प्रकार की हो। लेकिन दूल्हा–दूल्हन न हो तो सब बेकार है।

उसी प्रकार– धर्मस्थल पर सब तैयारी उत्तम प्रकार की हो लेकिन आत्मा की चर्चा न हो तो सब बेकार है। क्योंकि सब तैयारियाँ आत्मा के लिए ही थी।

जिस प्रकार– जेल का द्वार खुला हुआ हो तो कैदी भाग जाता है।

उसी प्रकार– शरीर में तो नौ द्वार हैं, आत्मा कब किस द्वार से निकल जाये कोई आश्चर्य नहीं है।

जिस प्रकार– पढ़–पढ़ कर कोई तैरना नहीं सीख सकता, तैर कर ही तैरना सीखा जाता है।

उसी प्रकार– पढ़–पढ़ कर कोई आत्मा का ज्ञान नहीं होता, आत्म ज्ञान (अनुभव) से ही आत्मा का ज्ञान होता है।

जिस प्रकार– स्वच्छ जल का लोटा भी भला है, गंदे जल का तालाब भी बेकार है।

उसी प्रकार– न्याय का धन थोड़ा भी भला है, अनीति अन्याय का बहुत धन बेकार है।

जिस प्रकार– चक्रवर्ती, मनुष्यों में शोभा पाता है।

उसी प्रकार– ब्रह्मचारी, गृहस्थों में शोभा पाता है।

जिस प्रकार– कोई प्रवीण पुरुष अपने अन्दर होनेवाले रोगों को पहचान कर और उनसे अपना अहित होता जानकर उन रोगों से छूटना चाहता है।

उसी प्रकार– सम्यग्दृष्टि जीव विशिष्ट कर्मों के संयोग से होनेवाले रागादि भाव को आत्म रोग जानकर, हानिकारक जानकर उनके त्याग का उपाय करते है।

क्रमशः संकलन – प्रो० पुरुषोत्तमकुमार जैन, रुड़की

समाचार-दर्शन

वीरशासन जयन्ती सानन्द सम्पन्न

तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ वीरशासन जयन्ती एवं श्रावण कृष्ण एकम् नववर्ष 14 जुलाई के पावन प्रसंग पर गोष्ठी (कालचक्र परिवर्तन) का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, संचालन समकित शास्त्री और वक्तागण श्रीमती देशना जैन नयी दिल्ली, डॉ. ममता जैन उदयपुर, श्रीमती प्रियंका जैन बेगलुरु, मंगलार्थी अर्चित जैन, मंगलार्थी आकिंचन जैन, जिसका मंगलाचरण बाल मंगलार्थी दिव्य जैन ने किया। वीरशासन जयन्ती के दिन प्रात: प्रक्षाल-पूजन, पूज्य गुरुदेवश्री का सीडी प्रवचन, स्वाध्याय और दोपहर में वाँचना, सायंकालीन जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् वीरशासन जयन्ती पर ब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन का स्वाध्याय एवं कण्ठपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसके निर्णायक मंगलार्थी सुलभ जैन, प्रतीक जैन, समर्पण जैन थे। सम्पूर्ण कार्यक्रम पूर्ण भक्तिभाव व उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

डीपीएस स्कूल परीक्षा परिणाम

तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ संचालित भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के कक्षा 12वीं व 10वीं के डीपीएस स्कूल परीक्षा परिणाम दिनांक 22 जुलाई 2022 को घोषित हुआ। जिसमें मंगलार्थी छात्रों का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। कक्षा 12वीं में मंगलार्थी वरांग जैन इन्दौर 96.6 प्रतिशत अंक के साथ अलीगढ़ जिले में सातवीं रैंक प्राप्त की व कक्षा 10वीं में मंगलार्थी विधान जैन ने 98.6 प्रतिशत के साथ जिले में सातवीं रैंक प्राप्त की व अन्य विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम भी बहुत अच्छा शत-प्रतिशत रहा। एतदर्थ सभी विद्यार्थियों को तीर्थधाम मंगलायतन परिवार द्वारा हार्दिक बधाई।

फिरोजाबाद में राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

फिरोजाबाद : उत्तरप्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान संस्कृति विभाग उत्तरप्रदेश सरकार, लखनऊ एवं आचार्य कुन्दकुन्द सेवा समिति, फिरोजाबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 14 जुलाई से 17 जुलाई 2022 तक 64 ऋद्धि विधान एवं 'अनेकान्त सिद्धान्त की प्रासंगिकता' इस विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें देश के प्रतिष्ठित विद्वान बालब्रह्मचारी अभिनन्दन शास्त्री, खनियांधाना; पण्डित प्रकाशदादा, ज्योतिर्विद मैनपुरी; डॉ. योगेशचन्द्र जैन, अलीगंज; डॉ. संजीव

गोधा, जयपुर; पण्डित निलय शास्त्री, आगरा; पण्डित गणतन्त्र शास्त्री, पण्डित अभिनव शास्त्री, मैनपुरी; पण्डित विनीत शास्त्री, पण्डित सोनू शास्त्री सोनगढ़; पाण्डे सौरभ जैन, पण्डित नवीन शास्त्री, मंगलार्थी अनाकुल जैन, पण्डित अनन्तवीर शास्त्री, पण्डित अनुराज शास्त्री, पण्डित अरहन्तवीर शास्त्री आदि विद्वानों की सराहनीय उपस्थिति रही। विधान की समस्त रूपरेखा पण्डित सुनील धवल द्वारा सम्पन्न करायी गयी। इस अवसर पर प्रो. अभयकुमार जैन, डॉ. राकेश सिंह आदि की महत्त्वपूर्ण भूमिका कार्यक्रम को भव्य बनाने में रही और सम्पूर्ण समाज ने धर्मलाभ लिया।

अकर्तावाद विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न

सागर (मकरोनिया) : दिनांक 13 जुलाई से 17 जुलाई 2022 तक जैनदर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धान्त **अकर्तावाद** विषय पर पाँच दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन मुमुक्षु मण्डल मकरोनिया सागर में सूत्रधार, आयोजक पण्डित अरुण मोदी परिवार सागर एवं पण्डित संजय शास्त्री सर्वोदय आदि के द्वारा किया गया। जिसमें देश के अनेकानेक विद्वानों ने अपना सारगर्भित वक्तव्य प्रदान किया। जिसमें डॉ. राकेश शास्त्री नागपुर का निर्देशन रहा। समय-समय पर देश के ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ विद्वान डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का भी सान्निध्य ऑनलाईन के माध्यम से प्राप्त हुआ। गोष्ठी में पण्डित अभयकुमार जैन देवलाली, डॉ. संजीव गोधा, डॉ. शान्तिकुमार पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागर जैन दिल्ली आदि और भी अनेक विद्वानों ने गोष्ठी को अपने स्तर से ऊँचाईयों पर पहुँचाया।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन रविवार, 17 जुलाई को भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के मंगलार्थियों द्वारा ऑनलाईन भक्ति के माध्यम से जिसका प्रसारण संचालित गोष्ठी में किया गया। कार्यक्रम के संयोजक पण्डित अरुण मोदी ने तीर्थधाम मंगलायतन के द्वारा संचालित गतिविधियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

अध्यात्म संजीवनी भजन संग्रह, भाग-6

मुम्बई : दिनांक 14 जुलाई 2022, श्री वीरशासन जयन्ती (भगवान महावीर प्रथम दिव्यध्वनि दिवस) के पावन अवसर पर श्री 1008 सीमन्धरस्वामी दिगम्बर जिनमन्दिर, विले पार्ला, मुम्बई में सभी साधर्मियों की उपस्थिति में अध्यात्म संजीवनी भजन संग्रह भाग 6का भव्य विमोचन किया गया।

इस ऑडियो एलबम में प्राचीनकालीन प्रमुख कवियों व ज्ञानीजनों द्वारा लिखे गए, अध्यात्म रस से ओतप्रोत भक्तिमय भजनों को वर्तमान के ख्यातिप्राप्त संगीतकारों

व गीतकारों द्वारा नवीन मधुरिम स्वर प्रदान किये गये हैं। अध्यात्म संजीवनी भक्तिमय भजन संग्रह भाग-6के डिजिटल संस्करण को श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा रेड रिबन एन्टरटेनमेंट के सहयोग से सभी डिजिटल प्लेटफार्मस् पर रिलीज किया गया है। इन भजनों को आप स्पोटिफाई, एप्पल म्यूजिक, गाना, जियो सावन, ऐमाजोन म्यूजिक, विंक, हंगामा, यू-ट्यूब म्यूजिक आदि ऑडियो एप्स पर सुन सकते हैं। तथा जल्द ही 'वीतराग वाणी के यू-ट्यूब चैनल' पर वीडियो के रूप में भी सुन व देख सकते हैं। आध्यात्मिक भजन संग्रह की यह शृंखला आगे भी अनवरत रूप से जारी है, जिसमें सभी जीवों को वैराग्य व शान्ति का मार्ग बतानेवाले कई भजनों की प्रस्तुति ट्रस्ट द्वारा की जायेगी।

विद्यानिकेतन शतरंज प्रतियोगिता सम्पन्न

तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ संचालित भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन में मंगलार्थी छात्रों द्वारा पाक्षिक सदन (वात्सल्य, प्रभावना, कारुण्य) 'प्रभावना सदन' द्वारा विद्यानिकेतन स्तर पर शतरंज प्रतियोगिता किया गया। जिसमें मंगलार्थी प्रशम गोधा चैम्पियन बने।

पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन

भिण्डर (राज.) : श्रुतपंचमी के पावन अवसर पर श्री 1008पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में श्रीमती राजरानी पूरणमलजी वक्तावत परिवार द्वारा पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण विधि विधान पण्डित अंकित शास्त्री लूणदा, एवं समकित शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

रात्रि में डॉ. अंकित शास्त्री ने श्रुतपंचमी के अवसर पर पाण्डुलिपियों के संरक्षण की प्रेरणा दी। जो आज वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

सामूहिक पूजन का आयोजन

हाथरस : जैन नवयुवक सभा के तत्त्वावधान में हलवाईखाना स्थित छोटे जैन मन्दिर में रविवार 24 जुलाई 2022 को मंगलायतन के निर्देशक पण्डित सुधीर जैन व मंगलार्थी समकित जैन कक्षा 12, तेजस जैन, पर्व जैन, दैविक जैन द्वारा सामूहिक पूजन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिगम्बर जैन मन्दिर के प्रबन्धक राकेश जैन, नवयुवक सभा अध्यक्ष उमाशंकर जैन, कोषाध्यक्ष कमलेश जैन, मंत्री सुधीर जैन आदि उपस्थित थे।

षट्खण्डागम ग्रन्थ की वाचना अनवरत प्रवाहित

तीर्थधाम मङ्गलायतन में प्रथम बार कीर्तिमान रचते हुए प्रथम श्रुतस्कन्ध '**षट्खण्डागम धवला टीका सहित**' वाचना का कार्यक्रम, मार्गशीर्ष पंचमी, शनिवार 5 दिसम्बर 2020 से करणानुयोग की विशेषज्ञ बालब्रह्मचारी कल्पनाबेन द्वारा अनवरत प्रारम्भ है। जिसकी प्रथम पुस्तक की वाचना का समापन 31 मार्च 2021 को; द्वितीय पुस्तक की वाचना का प्रारम्भ 01 अप्रेल से, समापन 08 जुलाई 2021 को; तृतीय पुस्तक की वाचना का प्रारम्भ 09 जुलाई 2021 तथा समापन 24 अक्टूबर 2021 को और चतुर्थ पुस्तक की वाचना का प्रारम्भ 25 अक्टूबर 2021 से 27 फरवरी 2022 को और पंचम पुस्तक की वांचना का 28 फरवरी 2022 से 24 अप्रेल 2022 तक भक्तिभावपूर्वक सम्पन्न हुई।

विद्वान बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन, जयपुर तथा सहयोगी भाई-बहिनों एवं मंगलायतन परिवार का भी लाभ प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण 16 पुस्तकों की वाचना निरन्तर तीर्थधाम मंगलायतन से प्रवाहित होती रहे, ऐसी भावना आदरणीय पवनजी जैन की थी। जिसमें क्रमशः...

छठवीं पुस्तक की वाचना 25 अप्रेल 2022 से प्रारम्भ

विद्वत् समागम - बालब्रह्मचारिणी कल्पनाबेन, जयपुर एवं सहयोगी भाई-बहिनों तथा मंगलायतन परिवार का भी लाभ प्राप्त होता है।

दोपहर 01.30 से 03.15 तक (प्रतिदिन)		**षट्खण्डागम (धवलाजी)**
रात्रि	07.30 से 08.30 बजे तक	मूलाचार ग्रन्थ का स्वाध्याय
	08.30 से 09.15 बजे तक	**समयसार ग्रन्थाधिराज के कलशों का व्याकरण के नियमानुसार शुद्ध उच्च्यारण सहित सामान्यार्थ**

नोट—इस कार्यक्रम में आप ZOOM ID-9121984198,
Password - mang4321 के माध्यम से भी शामिल हो सकते हैं।

सत्पात्रोपगतं दानं सुक्षेत्रे गतबीजवत्।
फलाय यदपि स्वल्पं तद्कल्पाय कल्पते॥

अर्थात् सत्पात्र में गया हुआ दान अच्छे स्थान में बोये हुए बीज के समान सफल होता है।

संयम प्रकाश, उत्तरार्ध तृतीय किरण, पृष्ठ 521

मङ्गल वात्सल्य-निधि

सदस्यता फार्म

नाम ....

पता ....

.... पिन कोड ....

मोबाइल .... ई-मेल ....

मैं '**मङ्गल वात्सल्य-निधि**' योजना की सदस्यता स्वीकार करता हूँ और मैं .... राशि जमा करवाऊँगा / दूँगा।

हस्ताक्षर

- चौथाई ग्रास दान भी अनुकरणीय -

ग्रासस्तदर्धमपि देयमथार्धमेव,
तस्यापि सन्ततमणुव्रतिना यथर्द्धिः।
इच्छानुसाररूपमिह कस्य कदात्र लोके,
द्रव्यं भविष्यति सदुत्तमदानहेतुः॥

अर्थात् गृहस्थियों को अपने धन के अनुसार एक ग्रास अथवा आधा ग्रास अथवा चौथाई ग्रास अवश्य ही दान देना चाहिए। तात्पर्य यह है कि हमें ऐसा नहीं समझना चाहिए कि जब मैं लखपति या करोड़पति हो जाऊँगा, तब दान दूँगा; बल्कि जितना धन हमारे पास है, उसी के अनुसार थोड़ा-बहुत दान अवश्य देना चाहिए। – आचार्य पद्मनन्दि : पद्मनन्दि पञ्चविंशतिका, श्लोक 230

यह राशि आप निम्न प्रकार से हमें भेज सकते हैं –

1. बैंक द्वारा

NAME	:	SHRI ADINATH KUNDKUND KAHAN DIGAMBER JAIN TRUST, ALIGARH
BANK NAME	:	PUNJAB NATIONAL BANK
BRANCH	:	RAILWAY ROAD, ALIGARH
A/C. NO.	:	1825000100065332
RTGS/NEFTS IFS CODE	:	PUNB0001000
PAN NO.	:	AABTA0995P

BHIM UPI Payments Accepted at
SHRI ADINATH KUND KUND KAHAN DIGAMBER JAIN TRUST
Account Number : 1825000100065332, IFSC Code: PUNB0001000

2. Online : http://www.mangalayatan.com/online-donation/

3. ECS : Auto Debit Form के माध्यम से।

तीर्थधाम मंगलायतन से प्रकाशित एवं उपलब्ध साहित्य सूची

मूल ग्रन्थ–

1. समयसार वचनिका
2. प्रवचनसार (हिन्दी, अंग्रेजी)
3. नियमसार
4. इष्टोपदेश
5. समाधितंत्र
6. छहढाला (हिन्दी, अंग्रेजी सचित्र)
7. मोक्षमार्ग प्रकाशक
8. समयसार कलश
9. अध्यात्म पंच संग्रह
10. परम अध्यात्म तरंगिणी
11. तत्त्वज्ञान तरंगिणी
12. हरिवंशपुराण वचनिका
13. सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन

1. प्रवचनरत्न चिन्तामणि
2. मोक्षमार्गप्रकाशक प्रवचन
3. प्रवचन नवनीत
4. वृहद्द्रव्य संग्रह प्रवचन
5. आत्मसिद्धि पर प्रवचन
6. प्रवचनसुधा
7. समयसार नाटक पर प्रवचन
8. अष्टपाहुड़ प्रवचन
9. विषापहार प्रवचन
10. भक्तामर रहस्य
11. आतम के हित पंथ लाग!
12. स्वतंत्रता की घोषणा
13. पंचकल्याणक प्रवचन
14 मंगल महोत्सव प्रवचन
15. कार्तिकेयानुप्रेक्षा प्रवचन
16. छहढ़ाला प्रवचन
17. पंचकल्याणक क्या, क्यों, कैसे?
18. देखो जी आदीश्वरस्वामी
19. भेदविज्ञानसार
20. दीपावली प्रवचन
21. समयसार सिद्धि
22. आध्यात्मिक सोपान
23. अमृत प्रवचन
24. स्वानुभूति दर्शन
25. साध्य सिद्धि का अचलित मार्ग
26. अहो भाव!

पण्डित कैलाशचन्द्रजी का साहित्य

1. जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला (भाग 1 से 7) (हिन्दी गुजराती)
2. मंगल समर्पण

अन्य

1. फोटो फ्रेम (पूज्य गुरुदेवश्री, बहिनश्री)

2. सी.डी.

3. मंगल भक्ति सुमन
4. मंगल उपासना
5. करणानुयोग प्रवेशिका
6. धन्य मुनिदशा
7. धन्य मुनिराज हमारे हैं!
8. प्रवचनसार अनुशीलन

बाल साहित्य (कॉमिक्स)

1. कामदेव प्रद्युम्न
2. बलिदान

आद. पवनजी की स्मृति में उपरोक्त साहित्य सभी मन्दिरों, ट्रस्ट, संस्थानों, विद्यालयों, पुस्तकालयों और साधर्मी भाई–बहिनों को स्वाध्यायार्थ निःशुल्क दिया जायेगा। सम्पर्क – सम्पर्कसूत्र – पण्डित सुधीर शास्त्री, 9756633800

Email : info@mangalayatan.com

– डाकखर्च आपका रहेगा।

तीर्थधाम मङ्गलायतन में

दशलक्षण महापर्व

के शुभ अवसर पर

भाद्र शुक्ल चतुर्थी से भाद्र शुक्ल चतुर्दशी तक
(बुधवार, 31 अगस्त से शुक्रवार, 09 सितम्बर 2022)

कार्यक्रम

प्रात: 07.00 से 08.30 बजे	प्रक्षाल-पूजन, विधान
09.15 से 09.45 बजे	पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन
09.45 से 10.30 बजे	स्वाध्याय (पण्डित सचिन जैन)
दोपहर 01.30 से 03.15 बजे	वाचना (धवलाजी-ब्र. कल्पनाबेनजी)
सायं 06.45 से 07.30 बजे	जिनेन्द्र भक्ति
रात्रि 07.45 से 08.45 बजे	स्वाध्याय (ब्र. कल्पनाबेनजी द्वारा)

—: नोट :—

सभी कार्यक्रम ऑनलाईन एवं ऑफलाईन संचालित होंगे।
बाहर से पधारनेवाले भाई-बहिन पूर्व में सूचना देवें,
जिससे उचित व्यवस्था की जा सके।

विनीत : श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ़

—: कार्यक्रम स्थल :—

तीर्थधाम मङ्गलायतन, अलीगढ़-आगरामार्ग, निकट हनुमान चौकी,
सासनी-204216 (अलीगढ़) फोन : 9997996346

तीर्थधाम मङ्गलायतन द्वारा संचालित
भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के गौरवशाली मङ्गलार्थी
कक्षा 10 वीं

Vidhan Jain (98.6%)
S/o Shri Virendra Jain
Faridabad (HR)
School - 1st Rank
District - 7th Rank

Adarsh Jain (92.6%)
S/o Shri Mukesh Jain
Jhansi (M.P.)

Sahaj Jain (92.2%)
S/o Shri Romesh Jain
Vikashpur

Sanyam Jain
(88.2%)
S/o Shri M. K. Jain
Agra (U.P.)

Divya Jain
(87.6%)
S/o Shri Manish Jain
Bhind (M.P.)

Akshat Jain
(83.6%)
Shri Anil Kr. Jain
Vilaspur (C.G.)

Sarthak Jain
(82.0%)
S/o Shri Sandeep Jain
Khatoli (U.P.)

Aman Jain
(79.8%)
S/o Shri Atul Jain
Jhansi (U.P.)

Anvesh Jain
(79.6%)
S/o Dr. A. K. Jain
Hawara (W.B.)

Aniket Jain
(79.2%)
S/o Shri Rohit Jain
Firozabad (U.P.)

Yash Malaiya
(73.8)
Shri Ashish Malaiya
Sagar (M.P.)

Veerbhadra Jain
(73.0%)
S/o Shri M.K. Jain
Nagpur (MH.)

तीर्थधाम मङ्गलायतन परिवार की ओर से सभी मङ्गलार्थी छात्रों को उनके उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

Regn. No. : DELBIL / 2001/4685 Postal regn. No. : A.L.G. / 29 / 2021-23

तीर्थधाम मंगलायतन में दिनांक 31-07-2022 तथा 01-08-2022 को सूरत से श्री संजय दीवानजी पधारे। आपने यहाँ संचालित गतिविधियों का लाभ लिया। आपने यहाँ विराजित जिनबिम्बों के दर्शन-पूजन एवं जिनवाणी मन्दिर तथा धन्य मुनिदशा का अवलोकन किया। यहाँ संचालित गतिविधियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में तीर्थधाम मंगलायतन की ख्याति विश्वभर में अनूठी है। आपने भविष्य में भी यहाँ पधारने की भावना व्यक्त की।

तीर्थधाम मंगलायतन से पण्डित अशोक लुहाड़िया, डॉ सचिन्द्र शास्त्री एवं श्री अनिल जैन ने मंगलायतन की परम्परा अनुसार अंगवस्त्र एवं अहोभाव भेंट किया।

पं. सं. : DELBIL/2001/4685

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक स्वप्निल जैन द्वारा **मङ्गलायतन** मुद्रणालय, आगरा रोड, अलीगढ़-202001 छपवाकर, 'विमलांचल', हरिनगर, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित। **सम्पादक :** डॉ. सचिन्द्र शास्त्री, मङ्गलायतन।

If undelivered please return to -

मङ्गलायतन

श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, हरिनगर, आगरारोड, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)

Shri Adinath-Kundkund-Kahan Digamber Jain Trust

Harinagar, Agra Road, Aligarh-202001 (U.P.)

Ph. : 9997996346, 2410010/10; Fax : 2410019/22

info@mangalayatan.com www.mangalayatan.com